प्रकाशन की तिथि 01.02.2016

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

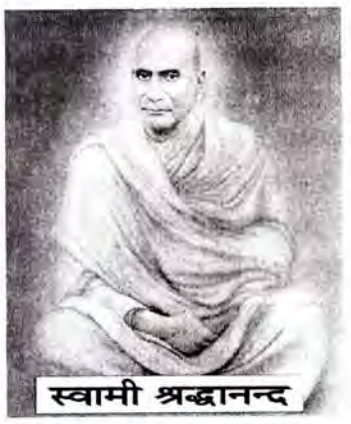
स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 39 अंक 2

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 300 रुपये

फरवरी 2016 विक्रम सम्वत् 2072 माघ-फाल्गुन

सनातन धर्मी नेता - पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼

प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

सावरकर : हम दसों दिशाओं से तुम्हें नमन करते हैं

-श्री अश्विनी कुमार,
सम्पादक, पंजाब केसरी

26 फरवरी को वीर सावरकर के चित्र को पार्लियामैंट के सैन्ट्रल हाल में लगाए जाने से विवाद खड़ा हो गया। तथाकथित धर्मनिरपेक्षता के अलमबरदारों को देश के ऊपर गंभीर खतरा मंडराता नजर आ रहा है। वीर सावरकर का चित्र वहां लगता या न लगाता, मेरे लिए यह बात उतनी महत्वपूर्ण नहीं, मेरी व्यक्तिगत सोच यह है कि संपूर्ण राष्ट्र आज उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर इसी बहाने गंभीरता से मनन करे, तब ही यह निर्णय किया जा सकता है कि वीर सावरकर की शोभा संसद में चित्र के लगाए जाने से बढ़ रही है या संसद का सम्मान वीर सावरकर की जीवंत स्मृति से हो रहा है। आज हम उस मुकाम पर खड़े हैं जहां से इतिहास हमें चुनौती दे रहा है।

- वीर सावरकर पर महात्मा गांधी की हत्या का आरोपी होने का इल्जाम लगाया जा रहा है।

- वीर सावरकर पर जिन्ना से पूर्व द्विराष्ट्र सिद्धांत के प्रणेता होने का अभियोग है।

- उनके कारण राष्ट्र के धर्मनिरपेक्ष स्वरुप पर खतरा मंडराता नजर आ रहा है।

आज जो लोग वी सावरकर पर उंगली उठा रह हैं, उन्हें पूरी तरह शायद सावरकर की जानकारी नहीं अन्यथा वह सैल्युलर जेल की माटी को अपने मस्तक पर धारण करते जहां कभी सावरकर भारत माता को आजाद कराने के क्रम में कैद काट रहे थे।

पाठकों की जानकारी के लिए अति संक्षेप में नीचे वीर सावरकर के चरित्र पर एक नजर डाल रहा हूँ। सन् 1906 में ब्रिटिश सरकार ने यह घोषण की वह भारत के कुछ प्रतिभाशाली छात्रों को छात्रवृत्ति देकर उच्च शिक्षा का प्रबन्ध करेगी। लोकमान्य तिलक की अनुशंसा पर सावरकर लंदन जा पहुँचे। वहां उन्होंन कानून में दाखिला लिया। कुछ दिन तक स्थिति को देखा और फिर 'फ्री इंडिया सोसायटी' का गठन कर दिया। जिन लागों ने सबसे पहले इसकी सदस्यता ग्रहण की, उनके नामों पर एक नजर डालें। वे थे भाई परमानंद, मदन लाल धींगड़ा, लाला हरदयाल, सरदार हरनाम सिंह और सेनापति वापट।

इस सोसायटी के गठन के दिन सावरकर ने इसके उद्देश्य को इस तरह वर्णित किया- 'शांति की जंग अधूरी है। भारत के सम्मान की रक्षा करने के लिए, इसकी अस्मिता के लिए हमें प्राणों की आहुति देने की शपथ लेनी होगी। जो भारत मां को गुलामी की बेड़ियों से जान देकर मुक्त कराना चाहें वे ही हमारे सदस्य बनें।'

इस सोसायटी में गिने चुने परन्तु प्रचंड राष्ट्रभक्त आए। इसी सोसायटी के सौजन्य से सावरकर ने तीन पुस्तकें लिखीं:

-मैजिनी की जीवन कथा।

- सिक्खी का इतिहास

- 1857 का स्वंतत्रता समर।

सिक्खों के इतिहास के अंश अक्सर सावरकर जनसभाओं में सुनाते और मांओं से मांग करते कि हमें अजीत सिंह और जुझार सिंह जैसे बच्चों की जरूरत है। फतेह सिंह और जोरावार सिंह चाहिए।

1857 के इतिहास में पहली बार राष्ट्र के वीरों के प्रति सम्मानपूर्ण शब्द कहे गए, अन्यथा आज तक लाल रंग में रंगे और बिके हुए इतिहासकारों ने उसे विकृत कर दिया था। खुफिया विभाग उनके पीछे पड़ गया। उन्होंने 1857 के इतिहास को अंग्रेजी में प्रकाशित करवा कर ब्रिटिश साम्राज्य की नींद हराम कर दी। लाला हरदयाल ने अपने अखबार 'गदर' में इसे धारावाहिक के रूप में छापा। भारतीय युवकों को बम बनाने की जानकारी देने के लिए उन्होंने रूस से तीन व्यक्ति भारत भेजे। सारा भारत बम के धमाकों से गूंज उठा।

13 मार्च 1910 को उन्हें लंदन में गिरफ्तार किया गया। एक जुलाई को पानी के जहाज द्वारा भारत भेजा गया। रास्ते में वह छलांग लगाकर समुद्र में कूद गए और फ्रांस की सीमा तक जा पहुंचे, परन्तु अंत में उन्हें अंग्रेजों को सौंप दिया गया। मुकदमा चला। सावरकर यरवदा जेल में बंद थे।

उनके वकील बने अंग्रेज बैरिस्टर वेपतिस्ता, श्री चितरे और श्री गाडगिल। उन पर अभियोग लगा कि उन्होंने बम बनाने की तकनीक भारत भेजी, क्रांति के लिए हथियार भेजे, इतिहास के माध्यम से जनभावनाएं उद्वेलित की, मदन लाल धींगरा को उकसा कर ब्रिटिश पदाधिकारी वायली को मरवाया। बहुत सी बातें मनगढ़ंत भी थीं। सावरकर ने कहा, "राष्ट्र को गुलामी के बंधनों से मुक्त कराना मेरा प्रथम लक्ष्य। इसके लिए सतत संघर्ष करना मेरा एकमात्र ध्येय। मैंने अपनी 'मां' से छल नहीं किया। एक स्वाभिमानी को जो करना चाहिए था, वही मैंने किया। मुझे इस न्यायालय से न्याय की कोई उम्मीद नहीं।"

उन्हें सजा मिली दो बार आजन्म कारावास। वहाँ से सैल्युलर जेल (अंडमान/कालापानी) भेजे गए और वहां जो अत्याचार उन पर किए गए उसे काश, मैं यहां लिख पाता। **गम सलाखों से बदन को दागे जाते समय 'वंदे मातरम्' बोलना राष्ट्र भक्ति थी या चरखे चलाते हुए निष्क्रिय बैठे रहना और अहिंसा-अहिंसा चिल्लाते हुए सवेरे जेल में ठूस दिया जाना और शाम को बाहर निकल आना।** वक्त आ गया है- और जब वक्त उस दौर का वास्तविक इतिहास लिखेगा, आप यकीन रखें वह तमाम तथाकथित महान लोग जो आज तक प्रचार माध्यमों की बैसाखियों पर महान बने बैठे हैं, धूल-धूसरित हो जायेंगे।

जनवरी 1921 में उन्हें भारत लाकर रत्नागिरी जेल में बंद कर दिया गया। यहाँ उनसे महात्मा गांधी और वीर भगत सिंह भी मिले। उन्होंने भगत सिंह से कहा, "पंजाब के बेटों पर इस मुल्क को गर्व है। तुम गुरु गोबिन्द सिंह के पुत्र हो। राष्ट्र की रक्षा के लिए फांसी पर झूलने से भी मत घबराना।"

भगत सिंह को यह पहली प्रेरणा थी। गांधी को उन्होंने कहा, "लीगी नेताओ से सावधान! वह देश

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

को तोड़ देना चाहते हैं, उनकी चालों पर नजर रखनी होगी।"

10 मई 1937 को अंततः सावरकर आजाद हो गए। 30 दिसम्बर, 1937 को वह सर्वसम्मति से हिन्दू महासभा के अध्यक्ष बने। उन्होंने भारत को 'हिन्दू' शब्द की परिभाषा दी – "सिंधु से लेकर समुद्र तक फैली, इस मातृभूमि को जो अपनी पितृभूमि और पुण्यभूमि मानता है, वही हिन्दू है।' 7 और 8 अक्टूबर 1944 को हिन्दू महासभा नई दिल्ली में अखंड भारत सम्मेलन हुआ। इसमें जगदगुरु शंकराचार्य, भरतपुर के महाराजा सवाई ब्रजेन्द्र सिंह, डाक्टर मुंजे हनुमान प्रसाद पोद्दार सब उपस्थित थे। वीर सावरकर ने सिंह गर्जना की – 'भारत को खंडित करने और पाकिस्तान बनाने की मांग ने राष्ट्र के शौर्य और स्वाभिमान को चुनौती दी है। ये कांग्रेसी अहिंसा की ओट में देश को विखंडित करने का षड्यंत्र रच चुके हैं। सावधान् राष्ट्र के हिन्दुओं जागो, अन्यथा देश के टुकड़े हो जाएंगे।'

उन्होंने एक बात और जोर देकर कालांतर में बार–बार कहीं– 'देश का बंटवारा मेरी लाश पर होगा, ऐसा बोलने वाले महात्माओं में यथार्थ के झंझावातों से जूझने की ताकत नहीं। इस आश्वासन में मत रहना, जागो, नहीं तो ये कांग्रेसी नेता राष्ट्र को तोड़ देंगे।

मैं इस मुकाम पर खड़ा अपने पाठकों से और देश के लोगों से एक प्रश्न पूछता हूँ : 'जिन्होंने राष्ट्र को झूठे आश्वासन दिए, जिन्होंने शेख के साथ मिलकर कश्मीर का सौदा कर दिया, जिन्होंने तिब्बत बेच दिया या जिन्होंने विभाजन का स्वीकार किया और जो पेरिस भेज कर अपने कपड़े धुलवाते रहे, वे आज पूजित हों या वह वीर सावरकर जिसने सर्वस्व न्यौछावर करके भी केवल एक ही आह्वान किया–अखंड भारत।'

आज जब संसद में एक और जिन्ना फिर पाकिस्तान की तर्ज पर जमीन मांगने का साहस करे तो उसे क्या जवाब दिया जाए, इसका निर्धारण सावरकर का चरित्र करे या वैसाखियों पर टंगे तथाकथित महापुरुष? आज मेरी लेखनी जवाब मांगती है।

– साभार

पञ्च महायज्ञ

यज्ञ शब्द की सिद्धि पाणिनीय धातुपाठ के "यज्ञ देव पूजासंगतिकरण दानेषु" (पा.धा 1/728) धातु से नङ्. प्रत्यय करके होती है। धात्वर्थ के अनुसार जिसके द्वारा या जिसमें देवपूजा, संगतिकरण और दान किया जाता है, उसे यज्ञ कहते हैं। यही यज्ञ शब्द का अर्थ है। निरुक्त में यज्ञ शब्द के पन्द्रह पर्यायवाची दिये हैं।

यज्ञो वेनोऽध्वरो मेघो विदथः सवनं मखः। इष्टिः होत्रा देवताता विष्णुः इन्द्रः प्रजापतिः धर्म्मः नार्यः पंचदश यज्ञनामानि चक्षते।। (निरुक्त–3/17)

यज्ञ शब्द इतना व्यापक है कि जगत् के जितने भी परोपकारमय कर्म हैं वे सब यज्ञ शब्द के द्वारा कहे जा सकते हैं।

हमारे प्रेरणास्रोत ऋषियों ने समस्त मानव समाज को पञ्चयज्ञों को करने का आदेश दिया है। यहाँ तक की इन यज्ञों को कभी भी न छोड़ने का विधान किया है और कहा है–

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्। होमो दैवो बलि भौंतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।
"पञ्च क्लृप्ता महायज्ञाः यथःशक्ति न हापयेत्" मनु. 3/70–71

(1) यज्ञों की परम्परा में प्रथम यज्ञ ब्रह्मयज्ञ है। **"ब्रह्म परमात्मा, ब्रह्म वेदः तौ इज्येते यस्मिन् स ब्रह्म यज्ञः"**

अर्थात् ब्रह्मनाम परमात्मा और वेद का है। उन परमप्रभु और वेद दोनों का संगमन जिसमें होता है वह ब्रह्मयज्ञ कहलाता है।

ब्रह्मयज्ञ के दो भाग है– (1) ईश्वरोपासना (2) स्वाध्यायः

ईश्वर की स्तुति – गुणों पर विचार, जिससे ईश्वर में रूचि और श्रद्धा जागृत हो। प्रार्थना – पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त प्रभु से कृपा की याचना और उपासना–प्रभु से सामीप्य की अनुभूति करने के साथ ईश्वर के अनुकूल गुण, कर्म, स्वभाव बनाने का प्रयत्न ब्रह्मयज्ञ का प्रथम भाग है। द्वितीय भाग स्वाध्याय का अर्थ है– "स्वं अध्ययनम् अथवा स्वो नाम वेदः तस्याउध्यायोऽध्ययनं स्वाध्यायः" अर्थात् अपना अध्ययन– आत्मनिरीक्षण और वेदाध्ययन को स्वाध्याय कहते हैं।

आचार्य व्यास योगदर्शन की व्याख्या में स्वाध्याय शब्द को और व्यापक बनाते हुए लिखते हैं–

स्वाध्यायः प्रणवादिपवित्राणां जपो मोक्ष शास्त्राध्ययनम् वा (योगदर्शन–(2/9) अर्थात् प्रणव (ओ३म्) का जप और मोक्ष शास्त्र का अध्ययन करना स्वाध्याय है। जिससे प्रभु के प्रति अति प्रेम के कारण मुक्ति प्राप्त हो उस विषय वाले ग्रंथों वेद उपनिषद, दर्शन आदि आर्ष ग्रंथों का अध्ययन स्वाध्याय है।

(2) मनुष्य का द्वितीय करणीय कर्म द्वितीय यज्ञ देव यज्ञ है। **देवान् यज्ञन्ति संगछन्ते येन कर्मणा अथवा देव इज्यन्ते संगम्यन्ते यस्मिन् स देव यज्ञः**

अर्थात् जिसमें देवों का यजन करते हैं उनके साथ संगमन करते हैं उसे देव यज्ञ कहते हैं। इसी को अग्निहोत्र, होम, हवन, यज्ञ आदि शब्दों के द्वारा भी कहा जाता है।

हुयते दीयतेऽसौ होमः यज्ञो वा "अर्थात् जो दिया जाता है अथवा जिसमें दिया जाता है उसे होम कहते है।

अग्निहोत्र शब्द में अग्नि और होता दो शब्द मिले हुए हैं। होत्र शब्द पूर्वोक्त हु धातु से ही बना है। इस शब्द की व्याख्या करते हुए दयानन्द ने लिखा है– **अग्नये परमेश्वराय जल वायु शुद्धि करणाय च होत्रं हवनं दानं चस्मिन् कर्मणि क्रियते तदाग्निहोत्रम्**। अर्थात् अग्नि स्वरूप परमेश्वर के लिए और जलवायु की शुद्धि के लिए होत्र–हवन, दान जिसमें किया जाता है उसे अग्नि होत्र कहते हैं।

सभी पञ्चतत्वों क्षिति जल, पावक गगन, समीरा को शुद्धि, पवित्र, सुस्थिर और स्वस्थ रखने के लिए ऋषियों ने सुन्दर समिधा को जलाकर उसमें घृतादि सुगान्धित, मिष्ट, पुष्टिकारक एवं रोगनाशक पदार्थों को डालकर इनको वायु के माध्यम से समस्त वातावरण में सम्प्रेषित करके समस्त जगत, पशु, पक्षी, प्राणी, वनस्पति, वायु, जल सबको स्वस्थ व संरक्षित करने की जा व्यवस्था हमें प्रदान की है उस व्यवस्था का नाम है देवयज्ञ। स्वास्थ्य की दृष्टि से हवन का बड़ा महत्त्व है, इससे वातावरण शुद्ध होता है। श्री मद्भगवद् गीता में व्यास जी ने श्री कृष्ण के मुख से कहलाया है–

अन्नाद् भवन्ति भूतानि
पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यः यज्ञः
कर्मसमुद्भवः।।

अर्थात् अन्न से प्राणी होते हैं, अन्न मेघ से होते हैं मेघ यज्ञ से वनते हैं और यज्ञ कर्म से उत्पन्न होता है। कर्म करें तो यज्ञ करें क्योंकि यज्ञ से बादल बनते हैं बादलों से वर्षा होकर वर्षा जल के कारण अन्न उत्पन्न होता है और अन्न से प्राणी उत्पन्न होते और जीवन प्राप्त करते हैं। अतः यज्ञ हमारे जीवन का कारण है ये यज्ञ हमारी संस्कृति के साथ रचे बसे हैं।

देवताओं की स्तुतपूर्वक हवन करना ही देवयज्ञ है। हवन के माध्यम से मनुष्य देवताओं से प्रेरणा और शक्ति प्राप्त करता है तथा अपने व्यक्तित्वत्व का विकास करता है। अग्निहोत्र अनेक प्रकार के होते हैं। उत्तरराम चरित 1/4 के संसार प्रसंग में द्वादश वार्षिक सत्र (बारह वर्ष तक) चलने वाले यज्ञ का उल्लेख मिलता है। महाकवि शूद्रक प्रणीत 'मृच्छ कटिक' नामक रूपक का नायक यह मानता हैं कि तप–मन–वाणी एवं बलिकर्म से पूजित, देवता शान्त चित्त वाले व्यक्ति से अवश्य प्रसन्न होते हैं अतः देवार्चन गृहस्थ का दैनिक धर्म है।

तृतीय यज्ञ पितृ यज्ञ है।

पितृयज्ञ शब्द से कोई यह न समझे कि यह यज्ञ केवल पिता के लिए है। किन्तु संस्कृत व्याकरण के अनुसार माता और पिता शब्द के द्वन्द्व समास में अर्थात् एक शब्द में कहने के लिए जब हम माता च पिता च (पिता और माता) ऐसा विग्रह करते हैं तो माता शब्द का लोप हो जाता है और द्विवचनान्त पिता शब्द के रूप चलते है। वहाँ पिता शब्द का अर्थ माता और पिता दोनों हैं **यथा–माता च पिता चेति पितरौ अथवा माता पितरौ। ताभ्यां पितृभ्यां यज्ञः पितृयज्ञः**। अर्थात् माता पिता के लिए अथवा माता–पिता के साथ जो उनके अनुकूल सद्–व्यवहार है वह पितृयज्ञ है। पितृभ्याम् शब्द तृतीया विभक्ति और चतुर्थी विभक्ति के द्विवचन में बनता है इसलिए दोनों विभक्यिों के अनुसार माता और पिता दोनों के लिए (चतुर्थी) और

माता–पिता के साथ (तृतीया) जो यज्ञ संगमनीय व्यवहार है वही पितृयज्ञ है।

पितृ शब्द "पा रक्षणे" धातु से बना है। धात्वर्थ के अनुसार रक्षा करने वाले, पालन करने वाले को पिता कहते हैं। इसी प्रकार "मा माने" धातु से माता शब्द की निर्मिति हुई है। **निर्माति या सा माता** जो निर्माण करती है उसे माता कहते हैं। दोनों के लिए किया जाने वाला जो यज्ञ है वह पितृयज्ञ है।

(4) गृहस्थ के कर्तव्यों में चतुर्थ कर्तव्य अतिथियज्ञ है। **अतिथये यज्ञः संगमनीयो व्यवहारः अतिथियज्ञः**। अर्थात् अतिथि के लिए कर्तव्य अतिथियज्ञ कहलाता है। प्रश्न है कि आतथि किसे कहते हैं? अतिथि शब्द की सिद्धि **"न तिथि र्यस्य निश्चिताऽगन्तुं सोऽतिथिः"** अर्थात् जिसके आगमन की कोई तिथि निश्चित नहीं है उसे अतिथि कहते हैं।

इस प्रकार भी की जाती है। तथा "अत सातत्यगमने" धातु से "इथि" प्रत्यय करके भी अतिथि शब्द की सिद्धि की गयी है। इस सिद्धि के अनुसार **"अतति निरन्तरं गच्छति भ्रमतीति अतिथिः अकस्मादागतः सज्जनोवा। न विद्यते नियता तिथिरस्येतित्युत्पयन्तरम्"** अर्थात् जो निरन्तर चलता है, भम्रण करता है उसे अतिथि कहते है जिसकी नियत तिथि नहीं है वह भी अतिथि है।

भारतीय समाज में अतिथि को देवता माना गया है – "अतिथि देवो भव।

इन व्याख्याओं के आधार पर जो वेद स्वाध्यायी, वेदाध्यापक, उपदेशक निरन्तर भ्रमण करते हुए जगत कल्याण के लिए उपदेशादि कर्म करता हो ऐसा विद्वान, वानप्रस्थ व संन्यासी अतिथि कहाता है। व्यापक अर्थों में जो हमारे घर आता है और जिससे किसी प्रकार के अहित की संभावना नहीं है वह हमारा अतिथि है उसे आने पर स्वागत करना जल देना भोजन कराना, वसत्र देना, मनसा वाचा कर्मणा यथायोंग्य प्रीति पूर्वक, धर्मानुसार व्यवहार करना ही अतिथियज्ञ कहलाता है।

(5) हमारा पाँचवाँ अपरित्यज्य अपरिहार्य कर्म पञ्चमयज्ञ बलिवैश्व देवयज्ञ "अथवा" भूतयज्ञ" है। भूतों को प्राणियों को तृप्त रखने के लिए जो उचित व्यवहार कर्म है वही भूत यज्ञ है। **विश्वेदेवा बलिनो भवन्ति येन कर्मणा स बलिवैश्वदेवः** जिस कर्म से सब देवता बली होते हैं वह कर्म बलिवैश्वदेव कहाता है।

मनुष्य चाहे तो सारी धरती के प्राणियों को समाप्त कर सकता है किन्तु सब के नष्ट हो जाने पर मनुष्य भी धरती पर जी नही सकता। हमारी जीवन रक्षक दवाइयों में शहद का प्रायः प्रयोग होता है। किन्तु मनुष्य ने दो अरब वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी शहद बनाना नहीं सीखा है। शहद के लिए मनुष्य आज भी नन्ही सी मक्खी पर निर्भर है। रेशम प्राप्त करने के लिए भी हम रेशम के कीड़ों पर आश्रित हैं। नन्हा सा अस्थिविहीन जन्तु केंचुआ हमारी मिट्टी में गहराई तक जाकर मिट्टी में रन्ध्र बनाकर मिट्टी को उपजाऊ बनाने में हमारा परम सहयोगी होता है। सबसे खतरनाक बताया जाने वाला सर्प वातावरण से जहरीली वायु को लेकर खुद जहरीला बन जाता है। और हमारे लिए शुद्ध आक्सीजन ग्रहण कराने में सहयोगी बनता है। गायें, बकरियाँ, भैंसे, भेड़े, ऊँटनी सब अपने मूत्र, गोबर एवं दूध तथा दूध से बने अन्य घृतादि पदार्थों द्वारा मानव जाति की सेवा करते रहते हैं। शीत से बचने के लिए मनुष्य आज भी भेड़ों के ऊन पर निर्भर है। कहाँ तक कहें जितने भी जीव जन्तु हैं वे सब किसी न किसी रूप में मानव जाति की सेवा ही कर रहे हैं। वृक्ष वनस्पति जल, थल, नभ सब हमारा हित करने में अहर्निश तत्पर हैं। इन सब जीव जन्तुओं, वृक्ष वनस्पतियों को बली बनाने के लिए "बलिवैश्वदेव यज्ञ" का विधान हमारे वैज्ञानिक ऋषियों ने किया है जिसमें अग्नि में दश आहुतियाँ देने और सब के लिए यथोचित भाग निकालकर यथोचित स्थान पर रखने का विधान किया गया है। भोजन बनाने पश्चात् सिद्ध अन्न से आहुति के पश्चात् वह अन्न कुत्तों, रोगादि पीडितों, कौओं और कीड़ों के लिए भी रखना चाहिए–

शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम्।
वायसानां कृमीणां च
शनकैनिर्वपेद् भुवि ।। मनु 3.92

भारतीय मनीषियों ने, वैदिक ऋषियों ने मानवों के लिए इन पाँच कर्तव्य कर्मों का विधान प्रत्येक मानव के लिए किया है इनका न करना पाप है। इनको सम्पन्न करना सर्वविध मंगल का कारण है।

शास्त्रों में दान की महिमा

–डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री

भारतीय संस्कृति में व्यक्ति, समाज एवं जाति से भी ऊपर उठकर विश्व बन्धुत्व की भावना को अधिक उत्तम माना गया है।

नीति–ग्रन्थों में – "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःखभाग् भवेत्।" की भावना को अंगीकृत किया गया है।

भारतीय ऋषियों ने गृहस्थ धर्म में जिस भूतयज्ञ और अतिथियज्ञों का समावेश किया है, वे भी निश्चय ही परोपकार एवं विश्व कल्याण की भावना से अनुप्राणित हैं।

गृहस्थ को तो अपने परिवार के भरण–पोषण के साथ ही साथ कुत्तों, कौओं, पापियों, रोगियों तक को भी दान द्वारा भोजन कराने का आदेश दिया गया है।

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण के उत्तरकाण्ड के 93वें सर्ग में श्रीराम की दानशीलता का वर्णन निम्न प्रकार से मिलता है–

उस अश्वमेघ यज्ञ में केवल एक ही बात सब ओर सुनाई पड़ती थी– जब तक याचक सन्तुष्ट न हों तब तक उनकी इच्छा के अनुसार सब वस्तुएँ देते रहो, इसके सिवाय दूसरी बात नहीं सुनाई देती थी। महात्मा श्रीराम के श्रेष्ठ यज्ञ में नाना प्रकार के गुड़ के बने हुए खाद्य पदार्थ और खाण्डव आदि तब तक निरन्तर दिये जाते रहे जब तक कि पाने वाले पूर्णतः सन्तुष्ट होकर बस न कर दें। जब तक याचकों के मन की बात ओठ से बाहर नहीं निकल पाती थी, तब तक ही राक्षस और वानर उन्हें उनकी अभीष्ट वस्तुएँ दे देते थे। वह यज्ञ दानराशि से पूर्णतः अलंकृत दिखाई देता था, जिसे सुवर्ण की आवश्यकता थी, वह सुवर्ण पाता था, धन चाहने वाले को धन मिलता था और रत्न की इच्छावाले को रत्न। वहाँ निरन्तर दिये जाने वाले चाँदी–सोने, रत्न और वस्त्रों के ढ़ेर लगे दिखाई देते थे। वहाँ आये हुए तपस्वी मुनि कहते थे कि ऐसा यज्ञ तो पहले कभी इन्द्र, चन्द्रमा, यम और वरुण के यहाँ भी नहीं देखा गया।

दान धर्म का विशिष्ट स्थान है। कहा भी है– पात्रे दानं सतां संग फलं मनुष्यजन्मनः। अर्थात् सत्पात्र को दान तथा सज्जनों का संग मनुष्य जन्म का फल है। कलियुग में दान धर्म सर्वोत्तम धर्म है।

द्वापरे यज्ञमेवाहुर्दानमेकं कलौ युगे।।

–मनु.1.86

दानवीर कर्ण, राजा बलि, राजा शिवि, महर्षि दधीचि, भामाशाह आदि दानवीरों के दृष्टांत दान धर्म की महत्ता को प्रकट करते हैं। जब मन में करुणा, त्याग एवं उदारता की लहर उठती है तभी दान दिया जा सकता है। दान मनुष्य के हृदय को उदार एवं विशाल बनाता है।

'दान' शब्द देना अर्थ की 'दा' धातु में भावार्थक ल्युट् प्रत्यय लगने से निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ देना अर्थात् अपने अधिकार की वस्तु को बिना किसी प्रतिफल की भावना के सद्पात्र को देना दान है।

अनुग्रह के लिए अपनी वस्तु का त्याग करना दान है। अनुग्रह के दो अर्थ होते हैं– उपकार एवं कल्याण।

उपकार की भावना से दिया जाने वाला दान अनुकम्पा दान कहलाता है। यह दान याचक को दिया जा सकता है।

कल्याण की भावना से दिया जाने वाला दान श्रद्धादान कहलाता है। यह दान गुरुओं को, ब्रह्मज्ञानियों को दिया जाता है।

शास्त्रों में दान के चार अंगों का वर्णन मिलता है – 1. दाता, 2. पात्र, 3. द्रव्य, 4. विधि।

1. दाता – दाता दान का श्रेष्ठ अंग है। दाता की शुभ भावना से दान की महिमा में वृद्धि होती है। दाता ही दान में फल का भोक्ता है। दाता की प्रशंसा करते हुए व्यासस्मृति में कहा गया है–

शतेषु जायते शूरः सहस्रेषु च पण्डितः।
वक्ता शतसहस्रषु,
दाता भवति वा न वा।।

अर्थात् सैंकड़ों में एक शूर होता है, हजारों में एक पण्डित होता है,

लाखों में एक वक्ता होता है, जबकि दाता हो अथवा न हो अर्थात् दाता अत्यन्त दुर्लभ है।

2. **द्रव्य**– दान का दूसरा महत्त्वपूर्ण अंग दिया जाने वाला द्रव्य है। दिया जाने वाला द्रव्य ग्रहण करने वाले के लिए उपयोगी एवं उसके गुणों को बढ़ाने वाला तथा जीवन–यात्रा में सहायक होना चाहिए।

3. **पात्र** – पात्र की विशेषता से दान महिमा को प्राप्त होता है। श्रेष्ठपात्र को दिया गया दान अधिक फलदायी होता है।

4. **दान की विधि** – दान देने की विधि से भी दान महिमा को प्राप्त होता है। सत्कारपूर्वक, श्रद्धापूर्वक, अहंकाररहित होकर, प्रसन्नतापूर्वक दान दिया जाना चाहिए। दान देने के बाद भी पश्चात्ताप नहीं होना चाहिए। यथासंभव दान गुप्त रखना चाहिए। इससे दान की विशेषता बढ़ जाती है।

दान के भेद –

1. **आहार दान या अन्नदान**– सभी ग्रन्थों में आहारदान या अन्नदान की चर्चा की गई है।

सर्वेषां दानानामन्नदानं परं स्मृतम्।
सर्वेषां जन्तूनां यतस्तज्जीवितं परम्।।

अर्थात् सभी दानों में अन्न दान श्रेष्ठ दान है, क्योंकि अन्न से ही प्राणियों का जीवन है।

2. **औषध दान** – मनुष्य जब रोगग्रस्त होता है तक वह कोई कार्य करने में समर्थ नहीं होता। सभी धर्मों में औषध दान को भी श्रेष्ठ दान कहा है– औषध दान के महत्त्व को समझकर ही अनेक सद्गृहस्थ औषधदान के महान् कार्य हेतु चिकित्सालयों का निर्माण करवाते हैं एवं विभिन्न रोगों की चिकित्सा के लिए शिविर लगाते हैं।

अभयदान –

अभयदान सभी दानों में श्रेष्ठ है, क्योंकि 'जान है तो जहान है' अभयदान के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए संवर्त्त स्मृति में कहा गया है– जीवों को अभय प्रदान करने से मानव सभी कामभोगों को प्राप्त करता है, लम्बी आयु प्राप्त करता है तथा सदा सुखी होता है।

विद्यादान–

ज्ञान के बिना मनुष्य अंधा है, अत्रिस्मृति में कहा गया है – **सर्वेषां दानानां विद्यादानं ततोधिकम्।**– अत्रिस्मृति, 336।

अर्थात् सभी दानों में विद्यादान बढ़कर माना जाता है।

महाभारत में तथा श्रीमद्भगवद गीता में 17/20–22 दान के तीन भेद बताये गये हैं–

(1) **सात्त्विक** – जो दान कर्त्तव्य बुद्धि से देशकाल एवं पात्र का विचार कर दान की भावना से दिया जाता है, वह दान सात्त्विक दान कहा जाता है।

(2) **राजस दान** – जो दान क्लेशपूर्वक प्रतिफल की इच्छा से दिया जाता है, वह दान राजस दान कहा जाता है।

(3) **तामस दान** – जो बिना सत्कार–सम्मान के अवज्ञापूर्वक देशकाल एवं पात्र का बिना विचार किए दिया जाता है, उसे तामस दान कहते हैं।

दान के उत्तम पात्र –

सुपात्र दान के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए पाराशर स्मृति में कहा गया है–

सुक्षेत्रे वापयेद्बीजं, सुपात्रे निक्षिपेद्धनम्।
सुक्षेत्रे च सुपात्रे च ह्युप्तं दत्तं न नश्यति।। – पाराशरस्मृति, 1.47

अच्छे खेत में बीज का वपन करना चाहिए तथा अच्छे पात्र में धन का निक्षेप करना चाहिए। क्योंकि अच्छे खेत में बोया गया बीज तथा सुपात्र को दिया गया धन कभी नष्ट नहीं होता है।

दान का फल –

दान मुख्यतः पुण्य का हेतु है, इससे स्वर्ग की प्राप्ति होती है और व्यक्ति इहलोक एवं परलोक में इच्छित भोगसामग्री पाता है। निष्काम भाव से दिया गया दान अपवर्ग या मोक्ष को प्रदान करने वाला है। विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के दान का फल निरूपित करते हुए बृहस्पति स्मृति में कहा गया है–

अन्नदा सुखिनो नित्यं वस्त्रदश्चैव रूपवान्।
स नरः सर्वदा भूपो यो ददाति वसुंधराम्।। – बृहस्पतिस्मृति, 13

अन्न का दान करने वाला नित्य सुखी होता है, वस्त्र का दान करने वाला रूपवान होता है तथा जो पृथ्वी का दान देता है, वह राजा बनता है।

दान का महत्त्व –

संसार में दान का महत्त्व सर्वाधिक है। दाता पृथ्वी पर पद्रहवाँ रत्न माना जाता है। दान की प्रवृत्ति एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिये अत्यावश्यक है। निष्काम दान के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए व्यास स्मृति में कहा गया है–

अदृष्टे चाशुभे दानं भोक्ता चैव न दृश्यते।
पुनरागमनं नास्ति तत्र दानमनंतकम्।। – व्यासस्मृति, 4.28

अर्थात् निष्काम भाव से दिया गया दान पुनरागमन को मिटाता है। अतः वह दान अनंत दान की श्रेणी में आता है।

नीतिशतकम् में धन की तीन गतियाँ बताकर दान की महिमा को बताया गया है–

दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुंक्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।। की. 21.42

दान, भोग और नाश धन की ये तीन गतियाँ होती हैं। जो न देता है और न खाता है, उसके धन की तीसरी गति होती है अर्थात् उसके धन का नाश होता है।

चाणक्य लिखते हैं–

विभवो दानशक्तिश्च नाऽल्पस्य तपस फलम्। चाणक्य नीति 2.2

अर्थात् विपुल धनराशि तथा उसके साथ दान देने की भावना ऐसे संयोग का होना थोड़े तप का फल नहीं है।

दानेन भूतानि वशी भवन्ति दानेन वैराण्यपि यान्ति नाशम्।
परोऽपि बन्धुत्वमुपैति दानैर्दानं हि सर्वव्यसनानि हन्ति।।

दान से सब प्राणी वश में हो जाते हैं, दान से सब वैरी समाप्त हो जाते हैं। दान से पराया भी अपना बन जाता है। दानी व्यक्ति व्यसनों में नहीं फँसता है।

गौरवं प्राप्यते दानात् न तु वित्तस्य संचयात्।
स्थितिरूच्चैः पयोदानां पयोधीनामधः स्थिति।।

दान करने से मनुष्य को गौरव की प्राप्ति होती है, धन संचय करने से गौरव नहीं मिलता। जल देने वाले सदैव ऊपर विरजते हैं और जल संचय करने वाला समुद्र की नीची स्थिति रहती है। महाभारत में उल्लेख मिलता है–

सार्थः प्रवसतो मित्रं भार्या मित्रं गृहे सतः।
आतुरस्य भिषड् मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः।

दूर देश में रहने वाले का धन ही मित्र है, घर में रहते हुए का मित्र पत्नी है रोगी का मित्र औषध है तथा मरने वाले का मित्र दान है।

दान प्रकरण –

इहलोक व परलोक में दान का फल – दान का फल मनुष्य को दोनों लोक में मिलता है। इस लोक में आत्मतुष्टि मिलती है और दूसरे लोक में अच्छी गति मिलती है। यथासाध्य दान देने के लिये सभी को उपदेश दिया गया है। अनुशासन पर्व में दान के माहात्म्य का बहुत गुणगान किया गया है। इसी वजह से अनुशासन पर्व को दानधर्म भी कहा जाता है।

युधिष्ठिर ने व्यासदेव से पूछा था कि दान एवं तपस्या में अपेक्षाकृत कष्टसाध्य क्या है। प्रत्युत्तर में महर्षि ने बताया था कि दान से अधिक दुष्कर और कुछ नहीं है। अर्थोपार्जन के लिये मनुष्य जितने कष्ट उठा सकता है, उतने और किसी चीज के लिये नहीं धन के लिये समुद्र के गर्भ में उतरना, पर्वत शिखर पर चढ़ना कुछ भी असम्भव नहीं है। अर्थ के लिये मनुष्य दासत्व तक स्वीकार करने में कुंठित नहीं होता। इतनी कठिनाइयों से अर्जित किया हुआ धन दूसरे को दान कर देना विशाल हृदय का परिचायक है। सत्पात्र को दान देना ही न्यायोपर्जित धन की उत्तम गति है।

आर्य समाज सुभाष नगर का वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

युवा विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ तथा वेदकथा का कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। आचार्य जी ने लोगों को यह सन्देश दिया कि मानवता की रक्षा वैदिक सिद्धान्तों से ही संभव है। वेद पथ से विचलन के कारण ही आज समाज में विसंगतियाँ है। प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि यथामति–यथाशक्ति अज्ञान–अविद्या–अभाव–अलिस्य के निवारण में अपना योगदान देवे।

सुप्रयास

सर्वात्मा सर्वान्तयामी सच्चिदानन्द परमात्मा अपनी कृपा से इस आशय को विस्तृत और चिरस्थायी करें। इस प्रयास को आरम्भ करते समय मैं महसूस कर रहा हूँ की परमात्मा की ओर से अभय, निःशकंता और आनन्दोत्साह उठ रहा है।

प्रयास का विषय : पूर्ण आप्त ईश्वर, ईश्वरकृत वेद, आप्त पुरुष ऋषि, आर्य, समाज और आर्यजन।

1. जो अविधादि क्लेश, कुशल, अकुशल, इष्ट, अनिष्ट और मिश्र फलदायक कर्मों की वासना से रहित है, वह सब जीवों से विशेष ईश्वर कहाता है।

2. वेद शब्द "विद" धातु से सिद्ध होता है जिसका अर्थ है "ज्ञान"

3. आप्त पुरुष ऋषि–उसे कहते हैं जो वेद–मन्त्रों के अर्थों के सक्षम द्रष्टा हों या जिनमें ऐसी योग्यता हो।

4. मन्त्र "गम्भीर विचार" को कहते हैं।

5. आर्य–श्रेष्ठ, कुलीन और सदाचारी मनुष्य को कहते हैं।

6. समाज– मनुष्यों के समूह और सभा को कहते हैं, अर्थात् ऐसा समूह या सभा जिसका उद्देश्य स्वयं सदाचारी बनना और अन्यों को बनाना है।

प्रत्येक जीव दुःखों से छूटना चाहता है। सारा जीवन दुःखों से संग्राम करते हुए व्यतीत हो जाता है परन्तु दुःख मिटने में नहीं आते। संसार में कहीं विरला ही कोई सुखी दिखाई देता है। महर्षि कपिल सांख्यदर्शन में कहते हैं– "कुत्रापि कोअपि सुखीति" अर्थात् कहीं ही कोई सुखी देखा जाता है। दुःखी सभी हैं।

सभी जीवों के दुःखी होने का यह कारण है कि हमने ऊपर लिखे 6 सुख स्वरूपों की नहीं मानी। अब देखना यह कि इन सुख–स्वरूपों का मनुष्यमात्र के लिये क्या उपदेश है।

ईश्वर सब को उपदेश करता है कि हे मनुष्यों ! मैं ईश्वर सब के पूर्व विद्यमान सब जगत का पति हूँ। मैं सनातन जगत्कारण और सब धनों का विजय करने वाला और दाता हूँ। मुझ ही को सब जीव जैसे पिता को सन्तान पुकारते हैं वैसे पुकारें मैं सब को सुख देनेहारा जगत के लिये नाना प्रकार के भोजनों का विभाग पालन के लिये करता हूँ। इसलिये तुम लोग मुझ को छोड़ किसी दूसरे को मेरे स्थान में मत मानो और मत जानो।

अर्थववेद वेद कहता है "मा विभेंन मरिष्यसि" अर्थात् हे आत्मन ! डर मत तू मरेगा नहीं। यर्जुवेद में लिखा है कि "मानो वधी पितरं मोत मातरम्" अर्थात् माता व पिता को कभी मत सताओ इन की सदा आज्ञा का पालन करो, सन्तान क लिये यह मूर्तिमान् पूजनीय देखे हैं।

पाणिनीय व्याकरण का सूत्र है है "स्वतन्त्रः कर्त्ता" अर्थात् जीव अपने कर्त्तव्य कर्मों में स्वतन्त्र और ईश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र हैं। ऋर्षि विरजानन्द की यह दृढ़ धारणा थी भारत के सभी रोगों की एकमात्र अमोध औषध है "अनार्षग्रन्थ विध्वंसपूर्वक आर्षग्रन्थ प्रचार" ऋषि दयानन्द कहते है कि दो ही प्रकार के लोग सुख भोगते हैं, एक तो वह जो अत्यन्त मूढ़ हों, दूसरा वह जो परम बुद्धिमान हों। स्वामी जी ने यह भी लिखा है कि जो जो जहां जहां भुगोलों वा पुस्तकों अथवा मन में सत्यज्ञान प्रकाशित हुआ है और होगा वह सब वेदों में से ही हुआ है क्योंकि जो जो सत्य विज्ञान है सो सो ईश्वर ने वेदों में धर रक्खा है।

सत्यार्थ प्रकाश एकाशसमुल्लास में स्वामी ने लिखा है– "जब कोई किसी को कहे कि हम तेरे बैठने के आसन वा नाम पर पत्थर धरें तो जैसे वह उस पर क्रोधित होकर मारता वा गाली प्रदान देता है वैसे ही जो परमेश्वर की उपासना के स्थान हृदय और नाम पर पाषाणदि मूर्त्तियां घरते हैं उन दुष्टबुद्धिवालों का सत्यानाश परमेश्वर क्यों न करें ?"

स्वामी जी के बनाए 10 नियमों के बारे में वे स्वयं लिखते हैं कि "आगे को कोई समाज के उद्देश्यों से विरूद्ध आचारण, भाषण करे, उसको एक–दो बार समझा दीजिए और न समझे तो उसे पृथक करते रहिये और सभासदों से मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा।"

एक गेल्डस्टकर साहब पैरस अर्थात् फ्रांस देश निवासी अपनी 'बायबिल इन इण्डिया' में लिखते हैं कि सब विद्या और भलाइयों का भण्डार आर्यावर्त देश है और सब विद्या तथा मत इसी देश से फैले हैं और परमात्मा की प्रार्थना करते हैं कि हे परमेश्वर ! जैसी उन्नति आर्यावर्त देश की पूर्वकाल में थी वैसी ही हमारे देश की कीजिये, लिखते हैं, उसमें देख लो।।"

तथा 'दाराशिकोह' बादशाह ने भी यही निश्चय किया था कि जैसी पूरी विद्या संस्कृत में है वैसी किसी भाषा में नहीं। वे ऐसा उपनिषदों के भाषान्तर में लिखते हैं कि मैंने अर्बी आदि बहुत सी भाषा पढ़ी परन्तु मेरे मन का सन्देह छूट कर आनन्द न हुआ। जब संस्कृत देखी और सुना तब निस्सन्देह होकर मुझ को बड़ा आनन्द हुआ है।"

आज हम आनार्य बनते जा रहें। अपने आपको आर्य बनाने के लिये हमें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत "संस्कार विधि" में लिखे 16 संस्कारों का पालन करना होगा। संस्कार शुद्धि क्रिया का नाम है। इन का पालन करने से श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न होगी एक प्रसिद्ध पाश्चात्य डाक्टर के निम्नलिखित वचन हमारे कथन का समर्थन कर रहे हैं:–

"श्रेष्ठ सन्तान का उत्पन्न करना और सन्तान को भला बनाना ऐसा उत्तम काम है कि आज तक इस पृथिवी पर नहीं हुआ"....

उत्तम सन्तान का उत्पन्न होना तभी सम्भभ हैं जब सन्तान की जननी देवियां उत्तम होंगी क्योंकि जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता। इसीलिए धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।

जब माता उत्तम होगी, तो सन्तान उत्तम होगी और परिवार उत्तम होगा परिवारों के उत्तम होने राष्ट्र उत्तम होगा राष्ट्र के उत्तम होने से संसार उत्तम होगा जब संसार उत्तम होगा तो स्वामी जी का स्वप्न कृणवन्तो विश्वम आर्यम्" पूरा होगा स्वामीजी ने "व्यवहार भानु" में लिखा है कि "सब मनुष्यों का विद्वान तो सम्भव ही नहीं, परन्तु धार्मिक होने का सम्भव सबके लिये है कि जैसे अपने सुख की प्राप्ति और दुःख के त्याग, मान्य होने, अपमान के न होने आदि की अभिलाषा करते हैं, तो दूसरों के लिये क्यों न करनी चाहिये ? मैं विद्वान नहीं हूँ, इस लिये मेरा विद्वानों से निवेदन है कि मेरे इस "प्रयास" को पढ़ कर मुझे यह बताने की कृपा करें कि कहा तक यह सुप्रयास है। इसके लिये मैं आप का अभारी रहूंगा।

इस लेख को लिखने से पहले मैंने स्वामी जी के इन शब्दों को पढ़ लिया था "जो कोई वेदों के अनुकूल अर्थात् आत्मा की शुद्धि, आप्त पुरुषों के ग्रन्थों का बोध और शिक्षा से वेदों को यथावत जानके कहता है, उसका वचन सत्य ही होता है। और जो केवल अपनी बुद्धि से कहता है, वह ठीक ठीक नहीं हो सकता" ।

इसलिये इस कार्य के करने में मैंने अथ से इति तक अपनी बुद्धि से काम नहीं लिया है। पूरे का पूरा मजमून ही आर्ष ग्रन्थों से लिया है। मैं तो केवल सग्रहकरता हूँ।

–नारायण दास प्रयासी
ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

मुश्किल घड़ी में भी सत्य पर अटल

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती वेदों के इस वाक्य को अपने उपदेश में दोहराया करते थे कि सत्य पर अटल रहना चाहिए। प्राण भी चले जाएं, किंतु सत्य का त्याग नहीं करना चाहिए। वह केवल वाणी से ही सत्य के महत्त्व को प्रस्तुत नहीं करते थे, बल्कि स्वयं उसका सदैव दृढ़ता से पालन किया करते थे।

स्वामी जी प्रवचन में स्वदेश प्रेम, राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपनाने, स्वदेशी वस्तुओं का इस्तेमाल कर कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने की प्रेरणा दिया करते थे। एक बार स्वामी जी किसी सभा में जाने वाले थे। उनके एक भक्त ने कहा वहां अंग्रेज गवर्नर और कलेक्टर होंगे। ऐसी स्थिति में प्रवचन में कोई ऐसी बात नहीं कहिएगा, जिससे किसी को बुरा लगे।

स्वामी जी समारोह में पहुंचे। प्रवचन शुरु करते ही वह बोले, लोग कहते हैं कि सत्य को प्रकट न करो, कलेक्टर–कमिश्नर–गवर्नर आदि को बुरा लगेगा। वे क्रोधित होंगे, पर चक्रवर्ती राजा भी क्यों न अप्रसन्न हों। हम तो सत्य ही कहेंगे। उन्होंने गीता का उद्धरण देते हुए आगे कहा, आत्मा को न तो कोई हथियार छेद सकता है और न ही आग जला सकती है। यह शरीर तो अनित्य है। इसकी रक्षा के लिए अधर्म करना व्यर्थ है। क्या कोई यह दावा कर सकता है कि वह मेरी आत्मा का नाश कर देगा ? शरीर रक्षा के लोभ में मैं सत्य को क्यों दबाऊं ? स्वामी जी की निर्भीक वाणी सुनकर सभी हतप्रभ रह गए।

गर्व से कहें हम भारतीय हैं

प्रश्न – सन माईक्रो सिस्टम का उप–संस्थापक कौन है?
उत्तर – श्री विनोद खोसला
प्रश्न – पेण्टियम चिप (कम्प्यूटर इसी पर चलता है) का शोध किसने किया था?
उत्तर – श्री विनोद दाहम।
प्रश्न – विश्व का तीसरा बड़ा धनी व्यक्ति कौन है?
उत्तर – 'फार्चून' पत्रिका के अनुसार विद्यमान स्थिति के अनुसार श्री अज़ीज़ प्रेमजी (विप्रो इण्डस्ट्रीज) और ब्रूने का सुल्तान अब छठे क्रम में है।
प्रश्न – हॉट मेल दुनिया का नम्बर एक ई. मेल प्रोग्राम–निर्माण एवं संशोधक कौन है?
उत्तर – श्री सबीर भाटिया।
प्रश्न – ए टी एण्ड टी (जिन्होंने कम्प्यूटर के बेसिक भाषा सी, सी, ++, यूनिक्स जैसे अनेक संशोधन किये) का अध्यक्ष कौन है?
उत्तर – श्री अरुण नेत्रावली।
प्रश्न – ह्यूलैट्ट पैक्कर्ड का महाप्रबन्धक कौन है?
उत्तर – श्री राजीव गुप्त।
प्रश्न – विण्डोज़ 2000 का एम.डी.टी. (माइक्रोसाफ्ट टैस्टिंग डायरैक्टर) कौन है, जिसने हर प्रारम्भिक समस्या का समाधान किया?
उत्तर – श्री संजय तेजरिका।
प्रश्न – सिटी बैंक, मैकेन्सी एवं स्टैण्डर्ड चार्टर्ड के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी कौन हैं?
उत्तर – श्री विक्टर मेरीसेस, रजत गुप्त एवं राणा तलवार।
प्रश्न – दुनिया की सर्वाधिक दीवाल–घड़ियों का निर्माता कौन है?
उत्तर – 'अजन्ता' एवं 'आरपेट'।

अमेरिका के धनीवर्ग में हम सभी भारतीय सम्मिलित हैं और हमारी स्थिति निवासी एवं गोरे लोगों से भी अति उत्तम हैं। अमेरिका में तीन लाख, बाईस हज़ार मिलियन भारतीय हैं जो वहां की जनसंख्या का कुल 1.5 प्रतिशत हैं।
अमेरिका में :–
38 प्रतिशत चिकित्सक भारतीय मूल के हैं।
12 प्रतिशत वैज्ञानिक भारतीय मूल के हैं।
36 प्रतिशत नासा (अन्तरिक्ष विज्ञान प्राधिकरण) वैज्ञानिक भारतीय मूल के हैं।
34 प्रतिशत माइक्रोसाफ़्ट कर्मचारी भारतवंशी हैं।
28 प्रतिशत आई.बी.एम. कर्मचारी भारतवंशी हैं।
17 प्रतिशत इण्टैल वैज्ञानिक भारतवंशी हैं।
12 प्रतिशत ज़ीरौक्स कर्मचारी भारतवंशी हैं।

वर्तमान में एक जर्मन पत्रिका में विश्व की दृष्टि में भारत के प्रतिनिधित्व के बारे में कुछ सच्चाइयां प्रकाशित की गयी जो निम्न हैं:–

1) पिछले 1000 वर्षों में भारत ने किसी भी देश में घुसपैठ नहीं की।

2) क्रमपद्धति को भारत ने आविष्कृत किया और आर्यभट्ट ने शून्य को आविष्कृत किया।

3) विश्व का सर्वप्रथम विश्वविद्यालय तक्षशिला में 700 ईसा–पूर्व में निर्मित किया गया तथा समग्र विश्व के लगभग 10500 विद्यार्थियों ने लगभग 60 विषयों का अध्ययन किया, नालंदा विश्वविद्यालय 400 ईसा–पूर्व में निर्माण हुआ जो विश्व के शिक्षा–जगत् में सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है।

4) 'फोर्ब्स' पत्रिका के अनुसार कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर के लिए संस्कृत सर्वोत्तम भाषा है।

5) आयुर्वेद चिकित्सा–पद्धति का भी जनक भारत है जो विश्व की प्रथम चिकित्सा–पद्धति है।

6) पश्चिमी देशों के पत्रकार भारत को लाचार, भ्रष्टाचारी, निर्धन कहकर सम्बोधित करते हैं परन्तु यही भारत 'सोने की चिड़िया' के नाम से प्रख्यात था।

70 वर्ष पूर्व जब एक राजनीतिक व्यक्ति ने कहा था कि हम भारत को फिर से 'सोने की चिड़िया' बना देंगे, तब वीर विनायक दामोदर सावरकर जी ने प्रतिकार किया था, "ऐसी भूल कभी मत करना। चिड़िया को तुम्हारे शत्रु मारकर खा जायेंगे और सोने को लूटकर ले जाएंगे।" उनका आशय यह था कि सैन्य शक्ति की अवहेलना भूलकर भी नहीं करना।

7) नाव चलाने की कला सिन्ध नदी में 5000 वर्ष पूर्व भी विद्यमान थी। संस्कृत शब्द नावगतिः से अंग्रेजी 'नेवीगेशीन' हुआ।

8) पाई मूल्य की गणना सर्वप्रथम बुद्धायन ने की थी, और उन्होंने ही पैथागोरियन थ्योरम बताया था। एक ब्रिटिश स्कालर ने 1999 में सरकारी तौर पर बताया कि बुद्धायन का कार्य छठी शताब्दी में हुआ था जो यूरोपियन गणितज्ञों से पर्याप्त पूर्व था।

9) अल्जेब्रा, त्रिकोणमिति एवं कैल्कुलस का भी आरम्भ भारत से हुआ। वर्ग समीकरण का आरम्भ भी ग्यारहवीं शताब्दी में श्रीधराचार्य ने किया था। ग्रीक एवं रोमन लिपि में सबसे बड़ी संख्या 106 थी जबकि भारतीय भाषा में 1053 थी।

10) जैमोलोजिकल संस्था अमेरिका के अनुसार सन् 1896 तक केवल भारत ही पूरे विश्व में हीरों का स्रोत था।

11) यू.एस.ए. की आई.ईईई. ने सिद्ध किया है कि एक शदाब्दि पूर्व के संदेश, वायरलैस संचार के पथ–प्रदर्शक प्रो. जगदीश बोस थे, मार्कोनी नहीं थे।

12) सर्वप्रथम बांध एवं जलाशय, सिचाई हेतु, सौराष्ट्र में बना था।

13) चैस्स (शतरंज) का भी आविष्कार सर्वप्रथम भारत में हुआ था।

14) सुश्रुत सर्जरी के जनक माने जाते हैं। 2600 वर्ष पूर्व उन्होंने एवं उनके समय के स्वास्थ्य–वैज्ञानिकों ने सर्जरी (शल्य–क्रिया) पर ग्रन्थ लिखा। सिज़ेरियन, कैटेरैक्ट, फ्रैक्चर एवं मूत्र–मार्ग की पथरी आदि की शल्य–चिकित्सा का वर्णन किया है। एनेस्थीसिया (बेहोश करने की विधि) का प्रयोग भी प्राचीन भारत में भलीभांति जाना जाता था।

15) 5000 वर्ष पूर्व दुनिया की संस्कृति खानाबदोशों की थी। तब भारत में सिन्धु घाटी में हड़प्पा की संस्कृति विद्यमान थी। सिन्धु घाटी की सभ्यता इसका प्रमाण है।

16) स्थान मूल्य पद्धति, दशमलव पद्धति का भी आरम्भ सर्वप्रथम भारत में 100 ईसा–पूर्व हुआ था।

संस्कारित युवा ही देश का भविष्य

आजादी की लड़ाई में गदर के शहीदों का अमूल्य योगदान रहा है। विदेशी शक्तियां पुनः भारतीय युवाओं को पथभ्रष्ट करने के लिए नशा व पाश्चात्य संस्कृति के मायाजाल में फसाना चाहती हैं। देश की रक्षा तभी होगी, जब हम उन्हें अपनी संस्कृति तथा देशभक्तों के पावन चरित्र से शिक्षित करेंगे– ये सद्विचार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने शहीद स्मृति चेतना समिति आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली में आयोजित अमर शहीद करतार सिंह सराबा की बलिदान शताब्दी पर पत्रकार चन्द्रमोहन आर्य की सचित्र पुस्तिका "क्रांति–गाथा" के विमोचन समारोह में कहें। साहित्यकार रविचन्द्र गुप्ता, पूर्व डी. सी.पी. चौ. चन्द्रभान, समाजसेवी के.के. अग्रवाल, दक्षिण दिल्ली शिक्षा समिति चेयरमैन यशपाल आर्य, प्रधान राम निवास गुप्ता ने "शहादत का मोल" कलैण्डर 2016 का भी लोकार्पण किया।

युवा प्रवक्ता अदीप सेतिया ने कहा– 16 जनवरी 1914 को "गदर अखबार" के माध्यम से अमेरिका व अन्य देशों के 8000 से अधिक भारतीयों को सशस्त्र क्रान्ति की प्रेरणा दी तथा स्वतंत्रता संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जिसके लिए करतार सिंह सराबा ने 16 नवम्बर तथा विष्णु गणेश पिंगले ने 17 नवम्बर को हंसते–हंसते फांसी का फंदा चूमा व देशवासियों को जागरुक किया।

वरिष्ठ पत्रकार जय सिंह कटारिया ने पेरिस में नर संहार की निन्दा करते हुए कहा कि देश के सर्वांगीण विकास हेतु भारतीय नागरिकों को भी एकजुट होकर विश्व में फैले आंतकवाद से निपटने के लिए सरकार से आग्रह करना होगा। इस अवसर पर देवीदत्त सजल, प्रेम कुमार शुक्ल भी उपस्थित थे।

– चन्द्रमोहन आर्य

कर्म करने में, हम तो स्वतन्त्र हैं मगर,
क्या परिणाम होगा, नहीं है खबर। कर्म...

अन्तरा,
हम को मानव बनाया, मनन के लिये, पाँचों ज्ञान्नेद्रिया दी, मनन के लिये।
तर्क बुद्धि से चुननी है, हम को डगर। कर्म.....
क्यों तुम हैरान हो, क्यों परेशान हो, तुम विधाता की रचना अति महान् हो।
श्रेष्ठ कर्मों से कर लो सुहाना सफर। कर्म....
इस तरफ प्रेय है, उस तरफ श्रेय है, श्रेय पथ को ही, पाना, तेरा ध्येय है।
फिर नहीं दूर, प्रियतम का प्रीतमगर, कर्म....
तन से–मन से– वचन से तू शुभ कर्म कर, तेरे जीवन का हर पल, जायेगा सँवर।
ओ३म् क्रतो स्मर, ओ३म् क्रतो स्मर।
कर्म करने में.....क्या परिणाम.....ख़बर

– सावित्री शर्मा, आर्य समाज राजेन्द्रनगर

लाला लाजपत राय

लाला लाजपत राय भारत के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। इन्हें पंजाब केसरी भी कहा जाता है। इन्होंने पंजाब नैशनल बैंक और लक्ष्मी बीमा कम्पनी की स्थापना की थी। ये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में गरम दल के तीन प्रमुख नेताओं लाल–बाल–पाल में से एक थे। सन् 1928 में इन्होंने साइमन कमीशन के विरुद्ध एक प्रदर्शन में हिस्सा लिया, जिसके दौरान हुए लाठी–चार्ज में ये बुरी तरह से घायल हो गये और अन्ततः 17 नवम्बर 1928 को इनकी महान आत्मा ने पार्थिक देह त्याग दी।

जीवन वृत्त –

लाला लाजपत राय का जन्म पंजाब के मोगा जिले में (जन्म 28 जनवरी 1865) को हुआ था। इन्होंने कुछ समय हरियाणा के रोहतक और हिसार शहरों में वकालत की। ये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गरम दल के प्रमुख नेता थे। बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्र पाल के साथ इस त्रिमूर्ति को लाल–बाल–पाल के नाम से जाना जाता था। इन्हीं तीनों नेताओं ने सबसे पहले भारत में पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग की थी बाद में समूचा देश इनके साथ हो गया। इन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती के साथ मिलकर आर्य समाज को पंजाब में लोकप्रिय बनाया। लाला हंसराज के साथ दयानन्द एंग्लो वैदिक विद्यालयों का प्रसार किया, जिन्हें आजकल डीएवी स्कूल्स व कालेज के नाम से जाना जाता है। लालाजी ने अनेक स्थानों पर अकाल में शिविर लगाकर लोगों की सेवा भी की थी। 30 अक्टूबर 1928 को इन्होंने लाहौर में साइमन कमीशन के विरुद्ध आयोजित एक विशाल प्रदर्शन में हिस्सा लिया, जिसके दौरान हुए लाठी–चार्ज में ये बुरी तरह से घायल हो गये। उस समय इन्होंने कहा था, मेरे शरीर पर पड़ी एक–एक लाठी ब्रिटिश सरकार के ताबूत में एक–एक कील का काम करेगी। और वही हुआ भी लालाजी के बलिदान के 20 साल के भीतर ही ब्रिटिश साम्राज्य का सूर्य अस्त हो गया। 17 नवंबर 1928 को इन्हीं चोटों की वजह से इनका देहान्त हो गया।

लालाजी की मौत का बदला –

लाला जी की मृत्यु से सारा देश उत्तेजित हो उठा और चंद्रशेखर आजाद, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव व अन्य क्रांतिकारियों ने लालाजी की मौत का बदला लेने का निर्णय किया। इन जाँबाज देशभक्तों ने लालाजी की मौत के ठीक एक महीने बाद अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर ली और 17 दिसम्बर 1928 को ब्रिटिश पुलिस के अफसर सांडर्स को गोली से उड़ा दिया। लालाजी की मौत के बदले सांडर्स की हत्या के मामले में ही राजगुरु, सुखदेव और भगतसिंह को फाँसी की सजा सुनाई गई।

–मोहनलाल वर्मा

जनवरी –2016 के आर्थिक सहयोगी

श्री गुरुदत्त तिवारी जी, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली		5000/–
श्री सत्यानन्द आर्य जी, पंजाबी बाग पश्चिमी, नई दिल्ली		5100/–
आर्य समाज लोदी रोड़, जोरबाग, नई दिल्ली		3100/–
आर्य समाज सी–3, जनकपुरी, नई दिल्ली		1100/–
श्री अखिलेश शर्मा जी प्रधान–आर्य समाज टैगोर गार्डन, नई दिल्ली (व्यक्तिगत)		1100/–
श्री लक्ष्मण देव छाबड़ा जी, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली		1000/–
आर्य समाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सै.–15, फरीदाबाद	मासिक	1000/–
आर्य समाज इन्द्रा नगर, बंगलौर	मासिक	750/–
श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी–महामंत्री शुद्धि सभा	मासिक	500/–
श्री प्रताप सिंह गुप्ता जी–आर्य समाज सी–3 जनकपुरी, नई दिल्ली		500/–
श्री रमेश मदान जी, आर्य समाज डी–ब्लाक, विकासपुरी नई दिल्ली (शुल्क+दान)		500/–
श्री सरवेन्द्र सिंह लोधी जी, बी.ए.आर.सी. कालोनी, बोईसर, पालघर (महा.)		201/–
श्रीमती राज सेठी जी, विजय नगर, दिल्ली	मासिक	100/–

श्री चन्द्रभान चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान

कु. गरिमा जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
श्री चन्द्रकला राजपाल जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	500/–
श्री सौरभ चौधरी जी, जी–ब्लाक, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–
श्रीमती ऊषा कुकरेजा जी, विकास पुरी, नई दिल्ली		50/–
श्रीमती संतोष कोछड़ जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–
श्री सुखदेव महाजन जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–
डॉ. पुष्पलता वर्मा जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–

श्री देवराज अरोड़ा जी (फरीदाबाद) द्वारा एकत्रित त्रैमासिक दान

श्री मदन लाल तनेजा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	675/–
श्री संजय जी श्री अजय जी अरोड़ा, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	600/–
श्री देवराज अरोड़ा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	325/–
श्री विजय अरोड़ा जी, टोरे एलटस, सै.–86, फरीदाबाद, हरियाणा	300/–
श्री मदन छाबड़ा जी, मालवीय नगर, नई दिल्ली	300/–
श्री वेद प्रकाश जी, रोहिणी, नई दिल्ली	300/–
श्री सुभाष अरोड़ा जी, सैक्टर–16 फरीदाबाद	225/–
श्री अनिल गुप्ता जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	225/–
श्री कृष्ण लाल टुटेजा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	150/–
श्री सुरेश जी भारत आप्टीकल्ज सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	150/–
श्री पवन अग्रवाल जी, औमेक्स हाईट्रक्स, फरीदाबाद	150/–

आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्री नगर लुधियाना में प्रवेश सूचना–सत्र 2016–2017

छठी कक्षा में (आयु +9 से 11 वर्ष से) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/– रुपए) भरकर 31.03.2016 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते है।)

कन्याओं की लिखित प्रवेश–परीक्षा 03 अप्रैल 2016 दिन रविवार को प्रातः 8:00 बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

–सत्यानन्द मुंजाल (कुलपति)

चलभाष : +91–9814629410

आगे बढ़े चलें

समय की यह पुकार है आगे बढ़े चलें
सुस्ती से कैसा प्यार है आगे बढ़े चलें
डरते नहीं खतरों से कदमों के हौसले
मन्ज़िल भी बेकरार है आगे बढ़े चलें
पीछे से आने वाले तो आगे निकल गए
अब किस का इन्तज़ार है आगे बढ़े चलें
बैठे रहे तो फिर न कभी उठ सकेंगे हम
ज़माना होशियार है आगे बढ़े चलें
खुद अपनी बिगड़ी आप बनाने की ठान लें
भगवान मददगार हैं आगे बढ़े चलें
कर्मों की श्रेष्ठता ही तो मानव की शान है
कितना भला विचार है आगे बढ़े चलें
निकले हैं घर से धर्म के प्रचार के लिए
क्या चीज़ जीत–हार है आगे बढ़े चलें
संसार में हो शान्ति वेदों के ज्ञान से
मिटने को अंधकार है आगे बढ़े चलें

– वेदप्रकाश शर्मा,
अतुल, गुजरात

महर्षि दयानन्द सरस्वती मार्ग का नामकरण

युगपुरुष राष्ट्रसन्त महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को स्मरण करते हुए राजेन्द्र प्लेस मेट्रो स्टेशन से शंकर रोड़ तक के मार्ग का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती मार्ग नाम रखा गया है। उत्तरी दिल्ली नगर निगम के यशस्वी पार्षद माननीय श्री राजेश भाटिया जी ने सत्प्रयास से यह कार्य शीघ्र संभव तथा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज राजेन्द नगर में दिनांक 9.1.16 को एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महापौर श्री रवीन्द्र गुप्ता, कामरोस संघ के राजदूत एवं आर्य समाज के विशिष्ट सहयोगी श्री के.एल. गंजू जी तथा अनेक पार्षद, पूर्व मन्त्री आदि उपस्थित थे। आर्यसमाज के प्रधान श्री अशोक सहगल जी ने सभी आगन्तुकों का स्वागत किया। मन्त्री श्री सतीश मैहिता जी ने सबका धन्यवाद किया।

– नरेन्द्र मोहन वलेचा (वरिष्ठ मंत्री)

वेद पथ ही समाज निर्माण का आधार –आचार्य गवेन्द्र

आर्य समाज प्रेमनगर गनौर (हरियाणा) का वार्षिकोत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा राष्ट्रीय कथाकार युवा विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री तथा भजनोपदेशक मोहित शास्त्री थे। समापन के अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी एवं सच्चिदानन्द जी के भी उद्बोधन हुए।

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-02-2016 (pages 8) Posting Date : 2-3 Every Month
Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2015-17

सेवा में,

शुद्धि समाचार

फरवरी – 2016

आज भी युवाओं के आदर्श हैं स्वामी विवेकानन्द

उठो, जागो और तब तक रुको नहीं जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए। युवाओं के बीच सकारात्मक ऊर्जा और बहुत कम उम्र में दुनिया में भारत की गरिमा बढ़ाने वाले नरेंद्र नाथ दत्त उर्फ स्वामी विवेकानन्द का जन्म कोलकाता में 12 जनवरी 1863 को हुआ। अपने विचारों से स्वामी विवेकानंद ने दुनिया के बीच भारत का डंका बजाया। इस युग पुरुष के जन्मदिवस को भारत में राष्ट्रीय युवा दिवस (यूथ डे) के तौर पर मनाया जाता है। उनका जन्मदिवस राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाए जाने का प्रमुख कारण उनका दर्शन, सिद्धांत, विचार और आदर्श हैं। इस साल स्वामी विवेकानंद की 153वीं जयंती मनाई जा रही है।

जब भारत को दुनिया में कमतर देश के तौर पर आंका जाता था, स्वामी विवेकानंद ने 11 सितंबर 1883 को अमेरिका के शिकागो में हुए विश्व धर्म संसद में हिन्दू धर्म पर भाषण देकर दुनियाभर से आए लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया था। स्वामी विवेकानंद द्वारा उस सम्मेलन में शामिल हुए लोगों के लिए संबोधन 'अमेरिका के भाइयों और बहनों' उस वक्त से लेकर आज तक लोगों के जेहन में है। उन्होंने ऐसे-ऐसे विचार दिए हैं जिन्हें अपनाने से किसी युवा के सोचने और जिंदगी जीने का नजरिया बेहतर हो सकता है।

जब अंग्रेजी के विरोध में खड़े हुए विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद मैकाले द्वारा प्रतिपादित और उस समय प्रचलित अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था के विरोधी थे। क्योंकि विवेकानंद का मानना था कि इस शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ बाबुओं की संख्या बढ़ाना था। विवेकानंद ऐसी शिक्षा चाहते थे जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो सके। बालक की शिक्षा का उद्देश्य उसको आत्मनिर्भर बनाकर अपने पैरों पर खड़ा करना है। स्वामी विवेकानन्द ने प्रचलित शिक्षा को निषेधात्मक शिक्षा की संज्ञा देते हुए कहा है कि आप उस व्यक्ति को शिक्षित मानते हैं जिसने कुछ परीक्षाएं उत्तीर्ण कर ली हों तथा जो अच्छे भाषण दे सकता हो, पर वास्तविकता यह है कि जो शिक्षा जनसाधारण को जीवन संघर्ष के लिए तैयार नहीं करती, जो चरित्र निर्माण नहीं करती, जो समाज सेवा की भावना विकसित नहीं करती तथा जो शेर जैसा साहस पैदा नहीं कर सकती, ऐसी शिक्षा से क्या लाभ?

अतः स्वामी जी सैद्धान्तिक शिक्षा के पक्ष में नहीं थे, वे व्यावहारिक शिक्षा को व्यक्ति के लिए उपयोगी मानते थे। व्यक्ति की शिक्षा ही उसे भविष्य के लिए तैयार करती है, इसलिए शिक्षा में उन तत्वों का होना आवश्यक है जो उसके भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हो। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में कहा जाए तो तुमको कार्य के सभी क्षेत्रों में व्यावहारिक बनना पड़ेगा। सिद्धान्तों के ढेरों ने सम्पूर्ण देश का विनाश कर दिया है। स्वामी जी शिक्षा द्वारा लौकिक एवं पारलौकिक दोनों जीवन के लिए तैयार करना चाहते हैं।

नर सेवा नारायण सेवा... का ध्येय

विवेकानंद का एक प्रमुख वाक्य था कि नर सेवा और नारायण सेवा... इसी वाक्य से प्रेरणा लेकर दिल्ली और देश के विभिन्न इलाकों में कई ऐसे संस्थाएं हैं जो लोगों का निःशुल्क मेडिकल सेवा देने का काम करते आ रहें हैं। आरएसएस से जुड़ी कई संस्थाएं राजधानी दिल्ली और देश के विभिन्न राज्यों में गरीब लोगों का इलाज मुफ्त में करती हैं। इससे जुड़े सदस्यों का कहना है कि संस्थाएं उन्हीं लोगों से इलाज के लिए शुल्क लेती हैं जो शुल्क देने में सक्षम होते हैं। निर्धन लोगों के लिए स्वास्थ्य सेवाएं निःशुल्क दी जाती हैं। वहीं विद्यार्थी परिषद भी स्वामी विवेदानंद को लेकर देशभर में कई कार्यक्रम आयोजित कर युवाओं को उनके बारे में बताते हैं।

श्रेष्ठ युवा बनने की प्रेरणा देते हैं विवेकानंद....

विवेकानंद पर आधारित स्वामी विवेकानंद के सपनों का भारत पुस्तक के लेखक लक्ष्मी नारायण भाला कहते हैं कि सपनों को साकार करने के लिए कैसे जिया जाता है, लक्ष्य तक पहुंचने के लिए क्या-क्या किया जाता है और हर युवा पीढ़ी को कैसे प्रेरित किया जाता, यह जानना हो तो हमें स्वामी विवेकानंद के जीवन को समझना और अनुकरण करना होगा। युवा दिवस की सार्थकता इसी में है। -साभार

"बाजार"

पढ़ना नहीं है
और डिग्री चाहिए
सीखना नहीं और
बनना है विशेषज्ञ
बाजार ने मनुष्यों की
जल्दबाजी और कायरता को समझा
और खोल ली दुकानें
सब कुछ बिक रहा है
डिग्री, डिप्लोमा, प्रमाण-पत्र
आता कुछ नहीं है
और मान्यता प्राप्त संस्थान ने
बना दिया विशेषज्ञ
नीम हकीम खतरे जान
कितने सारे डॉक्टर, इंजीनियर,
वकील, शिक्षक हो गये हैं
नतीजा ये पुल गिरा वो मरीज मरा
बेगुनाह फांसी चढ़ा
बच्चे ट्यूशन, कोचिंग के भरोसे
पास हो रहे है
दुकाने खुली है
बाजार सजा है
पैसा फेंको और जो चाहे बनो।

-देवेन्द्र कुमार मिश्रा (छिन्दवाड़ा)
मो. 9425405022

गाय अहन्या है

मूल रूप से वेद से निसृत मानव की सर्वप्रथम तथा पूर्णतः वैज्ञानिक भाषा संस्कृत के शब्दों के अर्थ शब्द में सम्मिलित सभी अक्षरों के धात्वार्थ को समाहित किये रहते हैं। इस लिये एक शब्द के अनेकार्थ होते हैं तथा किसी विशेष शब्द का अर्थ प्रसंग तथा वाक्य के भावार्थ पर निर्भर करता है। कालान्तर में कुछ शब्दों के लिये विशेष अर्थ भाषा में निर्धारित हो गये, इन्हें रूढ़ अर्थ कहते हैं जैसे कि अश्वः शब्द के मूल अर्थ में - तेज गति से चलने वाली अनेक वस्तुएँ हो सकती हैं किन्तु यह अश्वः शब्द सामान्यतः घोड़े के लिये आरूढ़ हो गया है। इसी प्रकार गौ-गौ-इस शब्द के अर्थ पर विचार करते हैं तो शब्दकोष कहता है - **गच्छति इति गोः**। इस दृष्टि से गो शब्द - **पृथ्वी, सरस्वती, वेदवाणी, इन्द्रिय, रत्न** आदि के लिये भी प्रयुक्त होता है, जैसे कि गो-स्वामी अर्थात् जिसने अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया, वह गोस्वामी है। संस्कृत की व्याकरण का तलस्पर्शी ज्ञान न होने के कारण अथवा निहित स्वार्थ के कारण वेदादि ग्रन्थों के विदेशी भाष्यकारों ने अनेक प्रकार से भ्रांतियुक्त तथा सनातन भारतीय परम्परा के विपरीत भाष्य किये हैं। उदाहरणतः गाय के मांस को ऋषि-मुनियों द्वारा भक्षण करना बताया जा रहा है, यह अज्ञानजन्य अथवा धूर्ततायुक्त ही है।

वस्तुतः गाय एक बहुपयोगी पशु है, इतना ही नहीं विस्तृत अध्ययन करने से वर्तमान वैज्ञानिकों ने भी इसकी पुष्टि की है। भारतीय वेदादि सद्ग्रन्थों के आधार पर तो गाय को पृथ्वी को धारण करने वाली शक्ति माना गया है-

गोभिर्विप्रैश्च वैदेश्चः सतिभिः सत्यवादिभिः।
अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिः धार्यते मही।।

"गोओं, वेदपाठियों, वेदों की उदात्त शिक्षाओं, सती-साध्वी नारियों, सत्यवादियों, निर्लोभियों तथा सात्त्विक दानदाताओं पर यह पृथ्वी टिकी हुई है।" गाय श्रेष्ठ जीव है जिसे भारतीय पशु कहना स्वीकार नहीं करते अपितु 'गोमाता' कहकर अपना सम्पूर्ण आदर समर्पित करते हैं, ऐसी गाय वध करने योग्य नहीं हो सकती, गोमाता अहन्या (अवध्य) है।

लेखक - सकरुण कुमार आर्य

मुद्रक, व प्रकाशक - रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली-7 दूरभाष : 23857244 से प्रकाशित। सम्पादक : डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री